रविवार 19 जुलाई, 2020

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: **व्यवस्थाविवरण** 30 : 20

"इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानों, और उस से लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ जीवन यही है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 36 : 5-9

5 हे यहोवा तेरी करूणा स्वर्ग में है, तेरी सच्चाई आकाश मण्डल तक पहुंची है।
6 तेरा धर्म ऊंचे पर्वतों के समान है, तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं; हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है॥
7 हे परमेश्वर तेरी करूणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखो के तले शरण लेते हैं।
8 वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।
9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. नीतिवचन 3 : 1-8

1 हेमेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;
2 क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।
3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना।
4 और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा॥
5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।

6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।
7 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।
8 ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी।

2. भजन संहिता 20 : 1, 2, 6

1 संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले! याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे स्थान पर नियुक्त करे!
2 वह पवित्र स्थान से तेरी सहायता करे, और सिय्योन से तुझे सम्भाल ले!
6 अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त का उद्धार करता है; वह अपने दाहिने हाथ के उद्धार करने वाले पराक्रम से अपने पवित्र स्वर्ग पर से सुनकर उसे उत्तर देगा।

3. भजन संहिता 21 : 1, 4

1 हेयहोवा तेरी सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा; और तेरे किए हुए उद्धार से वह अति मगन होगा।
4 उसने तुझ से जीवन मांगा, ओर तू ने जीवन दान दिया; तू ने उसको युगानुयुग का जीवन दिया है।

4. भजन संहिता 110 : 4

4 यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सर्वदा का याजक है॥

5. इब्रानियों 7: 1-3 (*से 2nd* ;)

1 यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक, सर्वदा याजक बना रहता है; जब इब्राहीम राजाओं को मार कर लौटा जाता था, तो इसी ने उस से भेंट करके उसे आशीष दी।
2 इसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया: यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात शांति का राजा है।
3 जिस का न पिता, न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा॥

6. 2 राजा 4 : 8-22, 27, 28, 30, 32, 33, 35 (तब लड़के ने छींका)-37

8 फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहां एक कुलीन स्त्री थी, और उसने उसे रोटी खाने के लिये बिनती कर के विवश किया। और जब जब वह उधर से जाता, तब तब वह वहां रोटी खाने को उतरता था।
9 और उस स्त्री ने अपने पति से कहा, सुन यह जो बार बार हमारे यहां से हो कर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है।
10 तो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं, और उस में उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहां आए, तब तब उसी में टिका करे।
11 एक दिन की बात है, कि वह वहां जा कर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में लेट गया।
12 और उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, उस शुनेमिन को बुला ले। उसके बुलाने से वह उसके साम्हने खड़ी हुई।
13 तब उसने गेहजी से कहा, इस से कह, कि तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिये क्या किया जाए? क्या तेरी चर्चा राजा, वा प्रधान सेनापति से की जाए? उसने उत्तर दिया मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूँ।
14 फिर उसने कहा, तो इसके लिये क्या किया जाए? गेहजी ने उत्तर दिया, निश्चय उसके कोई लड़का नहीं, और उसका पति बूढ़ा है।
15 उसने कहा, उसको बुला ले। और जब उसने उसे बुलाया, तब वह द्वार में खड़ी हुई।
16 तब उसने कहा, बसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी। स्त्री ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे परमेश्वर के भक्त ऐसा नहीं, अपनी दासी को धोखा न दे।
17 और स्त्री को गर्भ रहा, और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ।
18 और जब लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवने वालों के निकट निकल गया।
19 और उसने अपने पिता से कहा, आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर। तब पिता ने अपने सेवक से कहा, इस को इसकी माता के पास ले जा।
20 वह उसे उठा कर उसकी माता के पास ले गया, फिर वह दोपहर तक उसके घुटनों पर बैठा रहा, तब मर गया।
21 तब उसने चढ़ कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया, और निकल कर किवाड़ बन्द किया, तब उतर गई।
22 और उसने अपने पति से पुकार कर कहा, मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के भक्त के यहां झट पट हो आऊं।
27 वह पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुंची, और उसके पांव पकड़ने लगी, तब गेहजी उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए, परन्तु परमेश्वर के भक्त ने कहा, उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है।

28 तब वह कहने लगी, क्या मैं ने अपने प्रभु से पुत्र का वर मांगा था? क्या मैं ने न कहा था मुझे धोखा न दे?
30 तब लड़के की मां ने एलीशा से कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे न छोड़ूंगी। तो वह उठ कर उसके पीछे पीछे चला।
32 जब एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है।
33 तब उसने अकेला भीतर जा कर किवाड़ बन्द किया, और यहोवा से प्रार्थना की।
35 ... तब लड़के ने सात बार छींका, और अपनी आंखें खोलीं।
36 तब एलीशा ने गेहजी को बुला कर कहा, शूनेमिन को बुला ले। जब उसके बुलाने से वह उसके पास आई, तब उसने कहा, अपने बेटे को उठा ले।
37 वह भीतर गई, और उसके पावों पर गिर भूमि तक झुककर दण्डवत किया; फिर अपने बेटे को उठा कर निकल गई।

7. प्रकाशित वाक्य 21 : 2-4

2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।
3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।
4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।

8. भजन संहिता 23 : 6

6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 394 : 28-29

हमें याद रखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है, और यह कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

2. 487 : 27-1

यह समझ कि जीवन ईश्वर है, आत्मा, जीवन की मृत्यु रहित वास्तविकता, उसकी सर्वशक्तिमानता और अमरता में हमारे विश्वास को मजबूत करके हमारे दिनों को लंबा कर देती है।

यह विश्वास एक समझे हुए सिद्धांत पर निर्भर करता है। यह सिद्धांत संपूर्ण रोगग्रस्त बनाता है, और चीजों के स्थायी और सामंजस्यपूर्ण चरणों को सामने लाता है।

3. 27 : 10-16

यीशु ने अपने वैज्ञानिक कथन के अनुसार सूली पर चढ़ाए जाने के बाद अपने पुन: प्रकट होने से सिद्ध किया कि जीवन ईश्वर है: "मन्दिर(शरीर) को ढा दो, और मैं (आत्मा)उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" यह ऐसा है जैसे उसने कहा था: मैं - ब्रह्मांड का जीवन, पदार्थ, और बुद्धि - नष्ट होने के लिए नहीं है।

4. 51 : 15-18

वह जानता था कि इस मामले का कोई जीवन नहीं था और वह वास्तविक जीवन भगवान है; इसलिए वह अपने आध्यात्मिक जीवन से अलग नहीं हो सकता है क्योंकि भगवान को बुझाया जा सकता है।

5. 108 : 19-29

जब मृत्यु-घाटी की छाया में पहले से ही खड़े होकर, नेश्वर अस्तित्व की सीमा के पास, मैंने दिव्य विज्ञान में इन सच्चाइयों को सीखा है: सभी वास्तविक अस्तित्व ईश्वर दिव्य मन, में हैं, और वह जीवन, सत्य और प्रेम सर्व-प्रिय और सर्व-वर्तमान; सत्य के विपरीत, - जिसे कठिनाई कहा जाता है, पाप, बीमारी, बीमारी, मृत्यु, सामग्री में मन की झूठी भौतिक भावना की झूठी गग्रति है; यह असत्य भावना विकसित होती है, विश्वास में, नश्वर मन की एक व्यक्तिपरक स्थिति जो यह कथित मन के नाम का अर्थ रखती है, जिससे आत्मा की सच्ची भावना बंद हो जाती है।

6. 107 : 15-19

सदा झूठी चेतना को महसूस करते हुए कि जीवन शरीर में विरासत में मिला है, फिर भी यह याद रखना कि वास्तव में भगवान हमारा जीवन है, हम उन दिनों की संभावना में कांप सकते हैं जिसमें हमें कहना होगा, "मेरा मन इन में नहीं लगाता।"

7. 206 : 19-28

क्या ईश्वर बीमारी भेजता है, माँ को कुछ वर्षों के लिए अपने बच्चे को दे देता है और फिर उसे मौत के घाट उतार देता है? क्या परमेश्वर ने पहले से ही जो कुछ बनाया है वह नए सिरे से बना रहा है? इस बिंदु पर शास्त्र निश्चित हैं, यह घोषणा करते हुए कि उनका काम समाप्त हो गया था, भगवान के लिए कुछ भी नया नहीं है, और यह अच्छा था।

क्या मनुष्य के लिए कोई जन्म या मृत्यु, आध्यात्मिक छवि और भगवान की समानता हो सकती है? भगवान ने बीमारी और मौत भेजने के बजाय, उन्हें नष्ट कर दिया, और प्रकाश अमरता में लाया।

8. 200: 9-15 (*से 2nd.*)

जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है, भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से, और वह क्षय और धूल के अधीन नहीं है। भजनहार ने कहा: "तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।"

9. 243 : 30-6

बीमारी, पाप और मृत्यु जीवन का फल नहीं हैं। वे ऐसे लोग हैं जो सत्य को नष्ट कर देते हैं। पूर्णता अपूर्णता को चेतन नहीं करती है। भगवान जितना अच्छा है और सभी का स्रोत है, वह नैतिक या शारीरिक विकृति उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन इस तरह की विकृति वास्तविक नहीं है, लेकिन भ्रम है, त्रुटि का मतिभ्रम। दिव्य विज्ञान इन भव्य तथ्यों का खुलासा करता है। किसी भी रूप में कभी भी डरने या न मानने की गलती से, उनके आधार पर यीशु ने जीवन का प्रदर्शन किया।

10. 244 : 23-24

विज्ञान में मनुष्य न तो युवा है और न ही बूढ़ा। उसके पास न तो जन्म है और न ही मृत्यु।

11. 245 : 1-17, 25-3

यह सोचने की त्रुटि कि हम बूढ़े हो रहे हैं, और उस भ्रम को नष्ट करने के लाभों को एक अंग्रेजी महिला के इतिहास से स्केच में चित्रित किया गया है, जिसे लंदन मेडिकल पत्रिका में प्रकाशित किया गया है जिसे द लैंसेट कहा जाता है।

अपने शुरुआती वर्षों में प्यार से निराश होकर वह पागल हो गई और अपना सारा समय खो बैठी। यह मानते हुए कि वह अभी भी उसी घंटे में रह रही थी जिसने उसे उसके प्रेमी से अलग कर दिया था, कोई ध्यान नहीं दिया, वह अपने प्रेमी के आने के लिए खिड़की से पहले रोजाना देखती थी। इस मानसिक स्थिति में वह युवा बनी रही। समय की कोई चेतना नहीं होने के कारण, वह सचमुच बड़ी नहीं हुई। कुछ अमेरिकी यात्रियों ने उसे देखा जब वह चौहत्तर वर्ष की थी, और माना जाता था कि वह एक युवा महिला है। उसके पास कोई देखभाल करने वाला चेहरा नहीं था, न ही झुर्रियाँ थीं और न ही भूरे बाल, लेकिन युवा धीरे से गाल और भौंह पर बैठे थे। उसकी उम्र का अनुमान लगाने के लिए कहा, उसके इतिहास से परिचित लोगों ने अनुमान लगाया कि उसे बीस से कम उम्र का होना चाहिए।

मानसिक अवस्था के लिए वह खुद को युवा मानते हुए उम्र नहीं जता सकता था, शारीरिक रूप से नियंत्रित करता था।

गलतियाँ कभी नहीं होती हैं। पूर्वगामी की तरह एक उदाहरण सत्तर पर युवा होना संभव साबित करता है; और उस दृष्टांत का प्राथमिक यह स्पष्ट करता है कि निपुणता कानून के अनुसार नहीं है, न ही यह प्रकृति की आवश्यकता है, लेकिन एक भ्रम है।

अनंत न कभी शुरू हुआ और न कभी खत्म होगा। मन और उसके स्वरूपों का सत्यानाश कभी नहीं हो सकता। मनुष्य एक पेंडुलम नहीं है, जो बुराई और भलाई, खुशी और दुःख, बीमारी और स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है।

12. 246 : 10-26

सौर वर्षों से जीवन का माप युवाओं को लूटता है और उम्र के लिए कुरूपता देता है। पुण्य का उज्ज्वल सूर्य और होने के साथ सत्य सह-अस्तित्व। घटता हुआ सूरज उसकी शाश्वत दोपहर है, जो एक गिरते सूरज से अनिच्छुक है। भौतिक और भौतिक के रूप में, सौंदर्य की क्षणिक भावना फीकी पड़ जाती है, आत्मा की चमक उज्ज्वल और अपूर्ण चमक के साथ उत्कीर्ण भावना पर भोर होनी चाहिए।

उम्र पर कभी ध्यान न दें। कालानुक्रमिक डेटा हमेशा के लिए विशाल का हिस्सा नहीं हैं। जन्म और मृत्यु के समय-सारणी मर्दानगी और नारीत्व के खिलाफ बहुत सारे षड्यंत्र हैं। उस अच्छे और सुंदर सभी को मापने और सीमित करने की त्रुटि को छोड़कर, आदमी थ्रीस्कोर वर्ष और दस से अधिक का आनंद ले सकता है और अभी भी अपनी ताक़त, ताजगी और वादे को बनाए रखेगा। अमर मन द्वारा शासित मनुष्य हमेशा सुंदर और भव्य होता है। प्रत्येक सफल वर्ष ज्ञान, सौंदर्य और पवित्रता को प्रकट करता है।

13. 496 : 9-19

हम सभी को यह सीखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है। अपने आप से पूछें: क्या मैं उस जीवन को जी रहा हूं जो सर्वोच्च भलाई के लिए है? क्या मैं सत्य और प्रेम की उपचार शक्ति का प्रदर्शन कर रहा हूँ? यदि ऐसा है, तो रास्ता उज्जवल हो जाएगा "पूरे दिन तक।" आपका फल यह साबित करेगा कि परमेश्वर की समझ मनुष्य को क्या लाती है। शाश्वत रूप से इस विचार पर दृढ़ रहें, - कि यह आध्यात्मिक विचार है, पवित्र आत्मा और मसीह, जो आपको वैज्ञानिक निश्चितता के साथ, अपने ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम, अंतर्निहित, अतिव्यापी, और सभी को शामिल करने के आधार पर प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6